कोहरे को खतरनाक बनने से रोकिए

भारत डोगरा

इस जनवरी में उत्तर भारत जिस तरह कोहरे की चादर में लिपटा रहा, उसके बारे में प्रायः यह कहा जा रहा है कि इतना घना कोहरा अनेक वर्षों में नहीं देखा गया। इससे बाधित यातायात के कारण अरबों रुपए की क्षति हुई है। घने कोहरे से होने वाली यह क्षति कैसे कम हो, इसके बारे में अब पहले से अधिक गंभीरता से सोचना होगा। किंतु इससे भी ज़्यादा आवश्यक यह है कि धुंध व वायु प्रदूषण के मिश्रण से उत्पन्न होने वाले खतरे को रोका जाए क्योंकि पिछला अनुभव यह बताता है कि यह मिश्रण जानलेवा सिद्ध हो सकता है।

इस संदर्भ में लंदन के वर्ष 1952 के दिल दहलाने वाले अनुभव को याद रखना ज़रूरी है। उस वर्ष दिसंबर के महीने में ब्रिटेन की राजधानी में वायु प्रदूषण व खासकर सल्फर डाईऑक्साइड की मौजूदगी बहुत अधिक थी। यह धुंध के साथ मिलकर सल्फ्यूरिक एसिड बन गई थी और इसकी मौजूदगी में दमे के दौरे बहुत बढ़ गए थे। इस

कारण लंदन में चार हज़ार लोगों की मौत हुई थी।

इसके बाद लंदन में सल्फर डाईऑक्साइड को कम करने के सघन प्रयास किए गए। अधिक सल्फर वाले ईंधनों का उपयोग कम किया गया। बिजली उत्पादन संयंत्रों की चिमनियां ऊंची की गईं। इस तरह के कई उपायों से वायुमंडल में सल्फर डाईऑक्साइड कम करने में सहायता मिली।

इस दुखद वारदात को आज हमें ध्यान में रखना इसलिए ज़रूरी है क्योंकि उत्तर भारत में कोहरा घना होने की समस्या बढ़ रही है। वैसे तो वायु प्रदूषण को कम करना सदा ही ज़रूरी है, पर जब कोहरा घना होने की संभावना अधिक हो, तो उस समय वायु प्रदूषण को नियंत्रित करना पहले से कहीं अधिक ज़रूरी हो जाता है। अधिक वायु प्रदूषण व घने कोहरे के मिश्रण में जानलेवा स्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं। जब वायुमंडल ज़हरीला हो व सड़कों पर जाम लगा हो या ट्राफिक बहुत धीरे-धीरे बढ़ रहा हो, तो कई लोगों के लिए स्वास्थ्य समस्याएं बहुत बढ़ सकती हैं। विशेषकर जो लोग दमे जैसी स्वास्थ्य समस्या से प्रभावित हों उनके लिए तो स्थिति और विकट हो सकती है।

इन सब संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए वायु प्रदूषण को कम करने पर अब पहले से अधिक ध्यान देना आवश्यक है। ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 66 का हल

प्र	ति	ध्व	नि		ज़	र		मा
का			दा		ह		क्षा	र
श	नि		न	ज़ी	र			को
	रा				बा	ग	वा	नी
	मि		म	वा	द		य	
वि	ष	मां	ग				वी	
च			र	स	ना		य	श
ल	य		म		भि			ट
न		स्व	च्छ		क	ल	क	ल